INSTITUTE OF ADVANCED STUDIES IN EDUCATION,

BILASPUR (C.G.)

Affiliated to

ATAL BIHARI VAJPAYEE UNIVERSITY, BILASPUR (C.G.)

B.Ed. - II[nd] Year

PAPER-III

Curriculum & Knowledge

Unit- II
Nature of Knowledge

Unit- V
Children and Knowledge Construction

Smt. Nalini Pandey

बी.एड. द्‍वितीय-वर्ष

B.Ed. Second Year

पाठ्यचर्या एवं ज्ञान
Curriculum and Knowledge
Paper III

उद्देश्य - प्रश्न पत्र को पढ़ने से छात्र अध्यापकों में निम्नलिखित तथ्यों से अवगत हो सकेंगे -

1- पाठ्यचर्या की प्रकृति को समझ कर उसका पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक के साथ संबंध स्थापित कर सकें एवं कक्षा कक्ष गतिविधियों के संचालित कर सकने में तदनुसार सक्षम हो सकें।

2 - ज्ञान की प्रकृति को समझ सकें नैतिक मूल्यों को जान सकेंगे एवं कौशल की समझ उनमें विकसित हो सकेंगी|

3 - शिक्षा में कार्य के महत्व को जानकर परख कर सकने में सक्षम हो सकेंगे |

4 - शिक्षा के लिए सृजनात्मकता की योग्यता को समझ सकें |

5 - एक पाठ्यक्रम का ढांचा कैसे विकसित किया जाता है तथा इसके दस्तावेज की करण कैसे किया जाता है सीख सकेंगे |

Unit 2

(अ)

ज्ञान की प्रकृति

Nature of Knowledge

ज्ञान सामान्य अवधारणk & ज्ञान शब्द का अर्थ होता है किसी कार्य को जानना] किसी के बारे में जानना] किसी को जानना जैसे%&

1- मुझे रोटी बनाना आता हैA

2- राकेश स्मार्टफोन बहुत अच्छे से चला लेता है।

उपरोक्त वाक्य से स्पष्ट है कि किसी कार्य को करना आना ही उस कार्य को करने का ज्ञान है।

1- पंडित जवाहरलाल नेहरू हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे।

2- रायपुर छत्तीसगढ़ की राजधानी हैA

उपरोक्त दो वाक्यों से स्पष्ट है कि हम उनके बारे में जानते हैं या हमें उनके बारे में ज्ञान है।

1- मैं अपने मित्र की आदतों से पूर्णतया परिचित हूं।

2- मेरी मां सुबह देर से उठने पर नाराज होती हैं।

उपरोक्त वाक्य किसी व्यक्ति को जानने की ओर इंगित करते है।

अत: हम कह सकते हैं कि ज्ञान कोई ऐसी वस्तु नहीं है इसे प्राप्त नहीं किया जा सके यह सब निरंतर प्राप्त होते रहता है अपने आसपास हमारी रुचि के अनुसार हम ज्ञान प्राप्त करते हैं इस तरह प्राप्त ज्ञान प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं।

हमारे किसी कार्य से किसी को दु%ख पहुंचना] प्रसन्न करने के लिए कार्य करना] बात करना] प्रशंसा करना] न्याय&अन्याय आदि की सत्य जीवन&मूल्य को समझाना जानना भी ज्ञान हैA

अतः ज्ञान ऐसा तत्व नहीं है जिसे प्राप्त ना किया जा सके।

इस तरह ज्ञान के लिए हम कह सकते हैं कि ज्ञान तब बनता है जब एक व्यक्ति जानने योग्य कोई तथ्य से अवगत हो] उसे जानने की इच्छा रखें एवं वह तथ्य सत्य हो । तथ्य की जानकारी या ज्ञान जिसे होता है वह ज्ञाता] तथ्य Ks; एवं जानने की इच्छा रखने वाला जिज्ञासु कहलाता है।

तथ्य

ज्ञात → ——जिज्ञासq→

ज्ञेय

श्रेय ज्ञाता एवं जिज्ञासु इन तीनों के अलावा भी ज्ञान के लिए कुछ तथ्यों का होना आवश्यक है।

1- ज्ञाता के मन में अपने ज्ञान के प्रति विश्वास हो।

2- विश्वास का सत्य होना जरूरी हैA

3- विश्वास सत्य है सिद्ध करने के लिए प्रमाण हो।

4- ज्ञान के लिए तथ्य हो विषय हो।

5- ज्ञाता ज्ञेय और जिज्ञासु से ही ज्ञान होता है।

6- ज्ञान ज्ञाता की मन% स्थिति के अनुसार होता है। यह परिवर्तनशील है।

मानव विकास एवं ज्ञान - जैसे जैसे मानव के ज्ञान में वृद्धि हुई मानव जीवन में सभ्यता विकसित हुई या कहें मानव सभ्यता के साथ ज्ञान का विकास होते गया। कारणों पर विचार करें तो &

जिज्ञासा (Curiosity)- की जाने की इच्छा ने मानव ज्ञान में वृद्धि किया। ज्ञान की वृद्धि ने मानव सभ्यता का विकास कियाA इस तरह के मानव के विकास एवं ज्ञान विकास एक दूसरे से अन्योन्याश्रित रूप से संबंधित है।

अभ्यास (Practice)- यदि किसी चीज का ज्ञान हो गया हो तो उस में पारंगत होने के लिए अभ्यास करना अत्यंत आवश्यक है। जैसे& एक बच्चा साइकिल चलाना सीखने के बाद अभ्यास करता है तभी वह साइकिल चला सकने में सक्षम होता है अतः अपने जानने को अभ्यास करके ज्ञान प्राप्त किया।

संवाद ¼Dailoge½ संवाद भी मानव एवं ज्ञान के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैA प्रत्येक चैतन्य प्राणी में संवाद करने की कला होती है] जैसे& वन में पक्षी हिंसक पशुओं के आने पर संकेत अपनी भाषा में देते है जिससे अन्य प्राणी सजग हो जाते हैं किंतु मानव में यह असीमित होतh हैA संवाद के माध्यम से ही मानव को अपने भावी पीढ़ी को ज्ञान हस्तांतरित कर संरक्षित करता है और संवर्धित करने का संदेश देता है।

अतः ज्ञान जिज्ञासा] अभ्यास एवं संवाद के माध्यम से विकसित होता है और मानव को विकास में सहायक होता है।

मानव की जिज्ञासा (Curiosity of Human)की प्रकृति & मानव की जिज्ञासा निरंतर बढ़ने की प्रवृत्ति रखती है । वह शांत नहीं होतh बच्चों में यह और भी अधिक होतh हैA इसलिए कहते हैं कि बच्चे ज्यादा सीख सकते हैं या उनकी सीखने की गति ज्यादा होती हैA अनुभव ही जिज्ञासा को शांत करता है।

जिज्ञासा की सीमा या कमी (Limit)-

- मानव की जिज्ञासा यदि सही नहीं रहती तो वह मानव कल्याण की बजाय विनाश कर देतh है।
- कभी- कभी जिज्ञासा परिस्थिति सही नहीं मिलने के कारण भी अंजाम तक नहीं पहुंच पाती।
- जिज्ञासा को पूर्ण करने वाले ज्ञाता नहीं मिले ने से भी जिज्ञासा शांत नहीं होती और उसकी दिशा बदल जाती है।

The complex intersection between knowledge and social practice; knowledge being form through dialogues and shared with a large community

सामाजिक क्रिया समाज में कुछ मान्यताएं, वर्जनाएं , निर्देश अलिखित रूप से प्रचलित रहते हैं। इनके आधार पर ही उस समाज के लोग अपनी जीवनशैली तय करते हैं।

कोई भी बालक अपने घर से प्राप्त निर्देशों के आधार पर समाज के साथ अंतःक्रिया करता है। यह अंतःक्रिया बेहद जटिल होती है। बालक घर में, विद्यालय में एवं अनयत्र निरंतर मानसिक क्रिया करता हुआ ज्ञान प्राप्त करता है।

ज्ञान प्राप्त करने के लिए वह संवाद करता है एवं अनुभव प्राप्त करता है। बहुत बड़े समुदाय से प्राप्त अनुभव से वह ज्ञान प्राप्त कर अपनी मान्यता स्वयं बनाता है, कौशल प्राप्त करता है, धन अर्जन करता है और अपने अनुभव अपने बाद की पीढ़ी को देता है। इस तरह ज्ञान निरंतर संरक्षित एवं संवर्धित होते जाता है।

ज्ञान अर्जन का क्षेत्र व्यापक होता है। विषयों के अध्ययन से जो विद्यालय में प्राप्त होते हैं। कला, शिल्प, खेल , व्यापार , परंपराएं, लिखित ज्ञान, श्रुति ज्ञान, कार्य करके ज्ञान इस तरह अनुभवजन्य ज्ञान बालक प्राप्त करता है।

इस तरह यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। बच्चे निरंतर सीखते रहते हैं। यह एक जटिल प्रक्रिया है। कौन सा ज्ञान कहां से मिला या उसका कौन सा व्यवहार कहां, किससे सीखा हुआ है, एकदम से बताना कठिन होता है। मनुष्य सीखे हुए ज्ञान की प्रतिक्रिया समाज को अपने विवेक के आधार पर देता है।

बालक कर्तव्य निर्वहन सीखता है। बालकों को व्यक्तिगत बहुत का अवसर मिलता है सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है। बालक स्वयं की सृजनात्मक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक आदि शक्तियों का विकास करता हुआ अपने संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करता है। इस प्रकार बालक समूह में रहते हुए निरंतर स्वयं ज्ञान का निर्माण करते जाता है। यद्यपि ज्ञान निर्माण करने के लिए उसे परिस्थिति समाज से ही मुहैया कराई जाती है। अब हम देखेंगे कि समाज किस प्रकार बालक को ज्ञान निर्माण में सहायक होता है या कहें बच्चे के साथ या उसके अग्रज किस प्रकार ताना-बाना तैयार करते हैं। नवीन ज्ञान का सृजन कर सकें अनौपचारिक रूप से देखें तो बच्चा जन्म से ही समाज में रहता है। भाषा के संकेत भाव क्रियाएं सब कुछ वह अपने परिवार, बाहर, साथी, क्रीड़ा, मैदान,

मनोरंजन के साथ आदि स्थानों में समाज से ही सीखता है। दूसरे शब्दों में कहें तो समाज ही बच्चों को ज्ञान प्राप्त करने की परिस्थिति देता है। यद्यपि इन परिस्थितियों में उसके स्वयं के सीखने की इच्छा एक क्षमता का प्रभाव पड़ता है। यदि समाज ना होता तो बच्चा अनौपचारिक रूप से कुछ भी नहीं सकेगा जन्म से भेड़ियों के बीच पहले मानव की कहानी हम सब जानते हैं। इसी तरह औपचारिक शिक्षा की बात करें तो विद्यालयों में पाठ्यचर्या एक संसाधन के रूप में उपयोग किया जाता है जिसके माध्यम से बच्चों को उनकी रुचि के अनुकूल समाज की आवश्यकता के अनुरूप समाज के नागरिक के रूप में तैयार किया जाता है। विद्यालयों में बच्चों को चहुंमुखी विकास किया जाता है। वह समाज के नागरिक के द्वारा तैयार की गई योजना के आधार पर समाज के लिए किया जाता है । अतः हम कह सकते है कि ज्ञान सृजन की स्थिति, साधन सब कुछ समाज बनाता है। बच्चा वहां अंतःक्रिया करके अपने ज्ञान का सृजन करता है । बिना समाज के सहयोग के यह कार्य संभव नहीं है एवं बिना बच्चे की इच्छा के वह ज्ञान सृजन नहीं करेगा ।

अतः ज्ञान सृजन की प्रक्रिया में दोनों ही जरूरी है।

(ब)

Growth of Knowledge and Revision of Knowledge

ज्ञान का विकास एवं ज्ञान की पुनरावृति

ज्ञान का विकास -

शैशव काल से किशोरावस्था तक का समय तेजी से परिवर्तनशील होने का समय होता है। इस वय में बालक के द्वारा जो भी सीखा जाता है या ज्ञान प्राप्त किया जाता है उससे उनके व्यक्तित्व में परिवर्तन होता है। यह बालक के विकास की अवस्था होती है। इस समय निर्धारित पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए कि बच्चे के शारीरिक एवं मानसिक विकास में अंतर्संबंध हो एवं उसका उनका संतुलित विकास संभव हो सके।

- बच्चों को स्वस्थ रखने के लिए टिप्स दिए जाएं।
- मानसिक, सामाजिक, संज्ञानात्मक विकास के लिए खेलकूद, योग अन्य गतिविधियों का संचालन।

बच्चों को अतिरिक्त गतिविधियों में संलग्न अनौपचारिक रूप से कौशल विकास एवं आनंद प्राप्त कर सकें जैसे ही यह उपलब्धि से जोड़ा जाता है आनंद का स्थान तनाव ले लेता है। इसलिए इसे आनंद तक ही रहने दिया जाए। जो बच्चे अतिरिक्त गतिविधियों में विशेष योग्यता का प्रदर्शन करते हैं उन्हें अतिरिक्त कोच एवं समय दिया जाए।

इस तरह से बालक औपचारिक एवं अनौपचारिक ज्ञान विद्यालय और विद्यालय के बाहर समाज से ज्ञान प्राप्त करते हुए समाज का नागरिक बन जाता है।

जैसेजैसे मनुष्य के ज्ञान का क्षेत्र बढ़ता है-, सभ्यता का विकास होता गया और मानव का विकास भी होता गया। मानव का विकास ज्ञान पर निर्भर करता है और ज्ञान मानव ही विकसित करता है। आदि काल में मानव के रहन-सहन जीवन शैली, वर्तमान में मानव की जीवन शैली में बहुत ज्यादा अंतर आ गया है और यह अंतर निश्चित रूप से मानव के ज्ञान के अंतर या विकास के कारण ही संभव हो सका है।

मनुष्य होने की प्रकृति में एक मूलभूत परिवर्तन। हम एक शिकारी समुदाय से एक कृषि समाज में स्थानांतरित हो गए: एक ऐसा समाज जहां अर्थव्यवस्था फसलों और खेत के उत्पादन और रखरखाव पर आधारित है।

कृषि के बदलाव के साथ, मनुष्य बस गए और शहरों का जन्म हुआ। जल्द ही, मानवता के पास धन पैदा करने, भोजन पर कब्जा करने, खुद की जमीन पर कब्जा करने, शासक वर्ग बनाने और श्रम को विभाजित करने का साधन था। मानव इतिहास में पहली बार, असमानता समाज का एक हिस्सा थी। जैसे-जैसे संपत्ति बढ़ी, असमानता बढ़ती गई।

औद्योगिक क्रांतियों के कारण ज्ञान का विस्फोट हुआ। औद्योगिक क्रांति के बाद के चरणों में, इंटरनेट से जुड़ा समाज। इस बिंदु पर, दुनिया ने कभी भी ज्ञान, विचारों, क्षमताओं और अधिक साझा करने की क्षमता का अनुभव नहीं किया था।

REVISING KNOWLEDGE

ज्ञान की पुनरावृत्ति (संशोधित ज्ञान)

विद्यार्थियों को गंभीर विषय-वस्तु की गहराई से समझने की सहायता के लिए ज्ञान में संशोधन करना एक शिक्षण नीति है जिसमें पूर्व ज्ञान की समीक्षा करने वाली विविध विविक्त 1) ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का समावेश होता है। 2) गलतियों, गलतफहमी या गलतफहमी को पहचानना और सुधारना; 3) ज्ञान में अंतराल की पहचान; 4)पूर्व ज्ञान में संशोधन; और 5) विशिष्ट ज्ञान संशोधन के अंतर्निहित कारणों को समझाते हुए।ज्ञान को संशोधित करने के इन सभी पहलुओं में से प्रत्येक में, जब छात्रों के लिए सीधे सिखाया जाता है और उनके लिए प्रतिमान तैयार किया जाता है, न केवल उनके विषयगत ज्ञान को गहन करने की बल्कि महत्वपूर्ण सामग्री से संबंधित उनकी स्मृति और समस्या हल करने की क्षमता भी बढ़ सकती है.

ज्ञान में संशोधन की प्रक्रिया कक्षाओं या स्कूलों में स्वीकार नहीं की जाती। प्रत्येक आयु में और विकास के चरण में व्यक्ति अपनी पूर्व-जानकारी में त्रुटियों और गलत धारणाओं को ठीक करके तथा नई सूचनाओं को सुधारकर निरंतर संशोधन करते रहते हैं।इस लगभग अचेतन ज्ञान प्रक्रिया तथा संशोधित ज्ञान रणनीति के बीच की प्रतिक्रिया यह हैः आप, कक्षा के शिक्षक को जानबूझकर विद्यार्थियों के लिए यह प्रक्रिया सिखाना और मॉडल बनाना चाहिए कि वे महत्वपूर्ण विषयवस्तु का ज्ञान प्राप्त करें।

ज्ञानशोधन के लिए -

1- पूर्व समझदारी में संशोधन करने वाले सभी विद्यार्थियों को रखने के लिए सहकारी शिक्षण की शक्ति का उपयोग करें।

2- **धीरे धीरे अपने विचार को प्रबंधित करने के लिए छात्रों को जिम्मेदारी छोड़ देते हैं।**

(स)

Analysis of the Concept of Knowledge

ज्ञान की अवधारणा

किसी व्यक्ति को जानना, किसी कार्य को करने की विधि ज्ञात होना एवं कर सकने में सक्षम होना, किसी स्थान के बारे में जानना है उन चीजों का ज्ञान है। ज्ञान के लिए आवश्यक शर्तें हैं- ज्ञेय का होना ज्ञेय को देने के लिए ज्ञाता का होना, ज्ञाता से ज्ञान जिज्ञासु को मिलता है। जिज्ञासु में जानने की इच्छा का होना, ज्ञेय के प्रति विश्वास का होना एवं ज्ञेय को तर्क से सत्य सिद्ध कर सकना ज्ञान होने की शर्त है। यदि किसी ज्ञान को सत्य नहीं सिद्ध किया जा सकता तो वह ज्ञान नहीं है। ज्ञान एक मानसिक स्थिति है।

ज्ञान के प्रकार (Types of Knowledge)

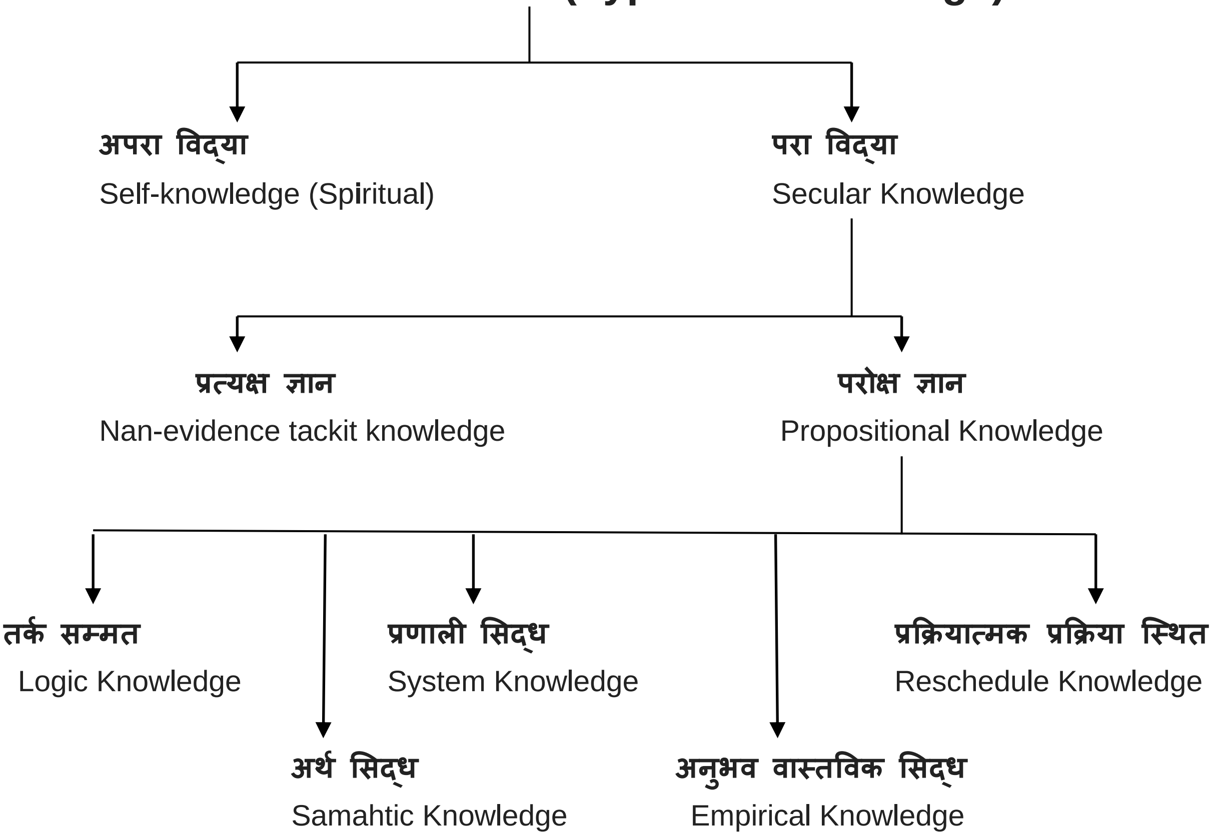

1- **तर्क सम्मत ज्ञान (Logical Knowledge)**

I. **निगमन ज्ञान (Deductive Knowledge)**

एक तर्क सम्मत व्यक्तव्य को विभिन्न उदाहरणों से सत्य सिद्ध करना ही Deductive Knowledge **है।**

Start from General Statement than we go to

त्रिभुज के तीनों कोणों का योग 180 **अंश होता है।**

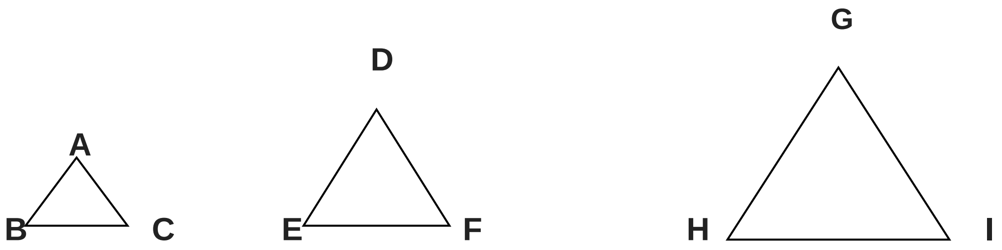

प्रत्येक त्रिभुज के तीनों कोणों का योग 180 **अंश होता है।**

II. **आगमन ज्ञान (Inductive Knowledge) उदाहरणों से सामान्य नियम तक पहुंचना।**

Heat

ठोस पदार्थ ⟶ **फैलाव**

कारण **परिणाम**

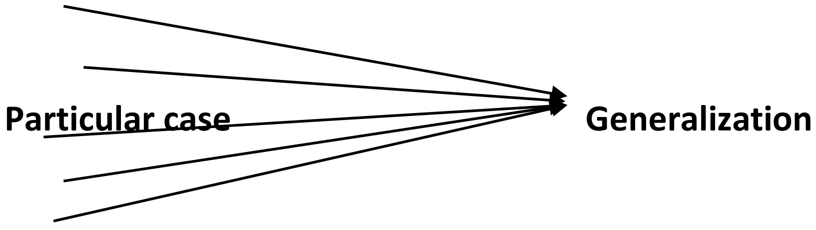

III. **संदेहास्पद ज्ञान (Abductive Knowledge) Inductive & Deductive के बीच का स्थिति न पूरी तरह Inductive न पूरी तरह Deductive**

उदाहरण:-

1. **बच्चे के जन्म के पूर्व उनके बालक या बालिका होने का अनुमान।**
2. **किसी महिला की डिलीवरी नार्मल होगी या आपरेशन से पूर्वानुमान।**
3. **लक्षण के आधार पर किसी बीमारी का पूर्वानुमान लगाना।**

ज्यादातर Medical Science में Knowledge Abductive प्रकार का होता है।

2- Samantic Knowledge – अर्थ सिद्ध ज्ञान- शब्द से ही अर्थ प्रकट हो।

Bachelor → Married man
Heat → Kind of energy

What or Why के प्रश्न -

विधवा ———

विधुर ———

3- **Systemic Knowledge- प्रणाली ज्ञान** - Arthemetic के सारे ज्ञान प्रणाली के अनुसार

- Addition ——— All Operation

प्रापर्टी - मरने के बाद संतान को सिस्टम है।

GST - लागू सिस्टम है।

4- Empirical Knowledge (Senciry experience) वास्तविक ज्ञान- अनुभव से प्राप्त ज्ञान। जैसे पंखा बंद होने पर गर्मी का अनुभव।

5- Procedural Knowledge (प्रक्रियात्मक ज्ञान)-

किसान को ——— खेती करने का

माली को ——— बगीचे का

कुम्हार को ——— चाकी को करे सीखना। एक निश्चित प्रक्रिया करना। Lab का प्रयोग भी इसी के अंतर्गत है।

प्रस्तावक ज्ञान,

PROPOSITIONAL KNOWLEDGE,

प्लेटो के मेनो और थेएटेटस से उभरने वाली पारंपरिक *"प्रस्तावात्मक ज्ञान की परिभाषा"* का प्रस्ताव है कि इस तरह के ज्ञान-यह जानते हुए कि कुछ मामला है-तीन आवश्यक घटक हैं। इन घटकों को इस दृष्टिकोण से पहचाना

जाता है कि ज्ञान सही विश्वास है। ज्ञान, पारंपरिक परिभाषा के अनुसार, एक विशेष प्रकार का विश्वास है, विश्वास जो दो आवश्यक शर्तों को संतुष्ट करता है: (1) जो माना जाता है उसका सत्य और (2) जो विश्वास किया जाता है उसका औचित्य। विश्वास की स्थिति, सत्य स्थिति, और ज्ञान के औचित्य की स्थिति के विभिन्न खातों की पेशकश करते हुए, कई दार्शनिकों ने माना है कि वे तीन शर्तें व्यक्तिगत रूप से आवश्यक हैं और संयुक्त रूप से प्रस्तावक ज्ञान के लिए पर्याप्त हैं।

विश्वास की स्थिति के लिए आवश्यक है कि कोई व्यक्ति किसी भी तरह से किसी भी प्रस्ताव को स्वीकार करे। यह स्थिति इस प्रकार मनोवैज्ञानिक रूप से संबंधित है जो कोई भी जानता है। यह प्रस्ताव करता है कि उस प्रस्ताव को स्वीकार करने में विफल रहने के दौरान कोई प्रस्ताव जानता है। कुछ समकालीन दार्शनिक ज्ञान के लिए विश्वास की स्थिति को अस्वीकार करते हैं, यह कहते हुए कि इसे वास्तविक ज्ञान के कई मामलों से अनुपस्थित मानसिक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता है। कुछ अन्य समकालीन दार्शनिक विश्वास की स्थिति का समर्थन करते हैं लेकिन इस बात से इनकार करते हैं कि प्रस्ताव के लिए वास्तविक आश्वासन की आवश्यकता होती है। वे प्रस्ताव करते हैं कि, विश्वास की स्थिति को देखते हुए, एक ज्ञानी को केवल एक प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए निपटाया जाना चाहिए। अभी भी अन्य दार्शनिकों का मानना है कि प्रस्ताव के ज्ञान के लिए आवश्यक विश्वास के प्रकार को एक ज्ञात प्रस्ताव के लिए सहमति की आवश्यकता होती है, भले ही सहमति वर्तमान या चालू न हो। पारंपरिक विश्वास की स्थिति विश्वास के लिए और विश्वास की वस्तुओं के लिए सटीक स्थितियों पर तटस्थ है।

सत्य स्थिति के लिए आवश्यक है कि वास्तविक प्रस्ताव ज्ञान तथ्यात्मक हो, कि यह प्रतिनिधित्व करे कि वास्तव में मामला क्या है। उदाहरण के लिए, यह स्थिति सामने आती है, निकोलस कोपरनिकस से पहले खगोलविदों

को पता था कि पृथ्वी समतल है। उन खगोलविदों ने माना हो सकता है - यहां तक कि उचित रूप से माना जाता है - कि पृथ्वी सपाट है, क्योंकि न तो विश्वास और न ही न्यायसंगत विश्वास के लिए सत्य की आवश्यकता होती है। सत्य की स्थिति को देखते हुए, हालांकि, सत्य के बिना प्रस्ताव ज्ञान असंभव है। कुछ समकालीन दार्शनिक ज्ञान के लिए सत्य स्थिति को अस्वीकार करते हैं, लेकिन वे एक छोटे से अल्पसंख्यक हैं। सत्य स्थिति के प्रस्तावक ज्ञान के लिए आवश्यक सत्य की तरह के लिए सटीक परिस्थितियों पर सहमत होने में विफल होते हैं। सत्य के लिए प्रतिस्पर्धा के तरीकों में पत्राचार, सुसंगतता, शब्दार्थ और अतिरेक सिद्धांत शामिल हैं, जहां बाद के सिद्धांत व्यक्तिगत रूप से विविधताओं के स्वीकार करते हैं। ज्ञान के लिए सत्य स्थिति, आम तौर पर तैयार की गई, सत्य का सटीक लेखा-जोखा पेश करने का लक्ष्य नहीं रखती है।

प्रस्तावक ज्ञान की औचित्य शर्त यह गारंटी देती है कि ऐसा ज्ञान केवल सच्चा विश्वास नहीं है। एक सच्चा विश्वास सिर्फ भाग्यशाली अनुमान से ही हो सकता है; उस स्थिति में यह ज्ञान के रूप में योग्य नहीं होगा। प्रस्तावक ज्ञान की आवश्यकता है कि इसकी विश्वास की स्थिति की संतुष्टि उपयुक्त रूप से इसकी सत्य स्थिति की संतुष्टि से संबंधित हो। दूसरे शब्दों में, एक ज्ञानी के पास पर्याप्त संकेत होना चाहिए कि ज्ञान के रूप में योग्य एक विश्वास वास्तव में सच है। प्लेटो और इमैनुएल कांट द्वारा सुझाए गए औचित्य के पारंपरिक दृष्टिकोण पर यह पर्याप्त संकेत, उपयुक्त प्रमाण है जो यह दर्शाता है कि एक प्रस्ताव सत्य है। इस पारंपरिक दृष्टिकोण पर, ज्ञान के रूप में अर्हता प्राप्त करने वाली सच्ची मान्यताएँ, साक्ष्य के औचित्य पर आधारित होनी चाहिए।

पाठ्यक्रम में प्रस्तावक ज्ञान, क्रियात्मक ज्ञान एवं एक्वेटेंस ज्ञान का विशेष स्थान। तीनों प्रकार के ज्ञान से ही बच्चों को शिक्षा दी जा सकती है।

प्रस्तावक ज्ञान के माध्यम से - इतिहास या व्याख्यात्मक ढंग से सिखाएं जाने वाली पाठ्यवस्तु का समावेश होता है। यह बच्चों में वर्णन करने की क्षमता का विकास करता है जो आवश्यक है।

प्रक्रियात्मक ज्ञान - ऐसी पाठ्यवस्तु जो एक निश्चित प्रक्रिया के अनुसार पूर्ण होती है। इसे प्रयोगात्मक ज्ञान भी कहते हैं। विज्ञान की विषय वस्तु का इसमें समावेश होता है। एक्वेटेंस ज्ञान - जाना पहचाना ज्ञान, जिसके बारे में जानना हो उससे पहले परिचय प्राप्त करें । नाव चलाना, साइकिल चलाना आदि।

इस तरह पाठ्यक्रम में उपरोक्त तीनों प्रकार के ज्ञान का अपना महत्व है उनका पाठ्यक्रम में समावेशन आवश्यक है।

प्रक्रियात्मक ज्ञान

Procedural knowledge

प्रक्रियात्मक ज्ञान (जिसे ज्ञान-के रूप में भी जाना जाता है, और कभी-कभी व्यावहारिक ज्ञान, अनिवार्य ज्ञान या प्रदर्शनकारी ज्ञान के रूप में जाना जाता है) [1] कुछ कार्य के प्रदर्शन में प्रयोग किया जाने वाला ज्ञान है। वर्णनात्मक ज्ञान के विपरीत (जिसे "घोषणात्मक ज्ञान" या "प्रस्तावक ज्ञान" या "जानना-जाना") के रूप में भी जाना जाता है, जिसमें विशिष्ट तथ्यों या प्रस्तावों (जैसे "मुझे पता है कि बर्फ सफेद है") का ज्ञान शामिल है, प्रक्रियात्मक ज्ञान में किसी की क्षमता शामिल है कुछ करो (जैसे "मुझे पता है कि फ्लैट टायर कैसे बदलना है")। एक व्यक्ति को ज्ञान के रूप में गिनने के लिए अपने प्रक्रियात्मक ज्ञान को मौखिक रूप से व्यक्त करने में सक्षम होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि प्रक्रियात्मक ज्ञान को केवल यह जानना आवश्यक है कि किसी क्रिया को सही ढंग से कैसे किया जाए या एक कौशल का उपयोग किया जाए। [२] [३]

शब्द "प्रक्रियात्मक ज्ञान" में संज्ञानात्मक मनोविज्ञान और बौद्धिक संपदा कानून दोनों में संकीर्ण लेकिन संबंधित तकनीकी उपयोग हैं, जिनकी चर्चा नीचे की गई है।

अवलोकन

प्रक्रियात्मक ज्ञान (यानी, ज्ञान-कैसे) वर्णनात्मक ज्ञान (यानी, ज्ञान-से) से अलग है, जिसमें इसे सीधे किसी कार्य पर लागू किया जा सकता है। [२] [४] उदाहरण के लिए, समस्याओं को हल करने के लिए प्रक्रियात्मक ज्ञान का उपयोग करने वाला व्यक्ति घोषित ज्ञान से भिन्न होता है, जिसके पास समस्या को हल करने के बारे में जानकारी होती है क्योंकि इस ज्ञान का निर्माण किसके द्वारा किया जाता है। [५]

शैक्षिक निहितार्थ

कक्षा में, प्रक्रियात्मक ज्ञान एक छात्र के पूर्व ज्ञान का हिस्सा है। औपचारिक शिक्षा के संदर्भ में प्रक्रियात्मक ज्ञान वह है जो सीखने की रणनीतियों के बारे में सीखा जाता है। यह कक्षा में एक छात्र का उपयोग करता है, "लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए नियोजित कार्यों केविशिष्ट नियम ", कौशल, कार्य और अनुक्रम हो सकते हैं काउली)", (1986। प्रक्रियात्मक ज्ञान के लिए एक उदाहरण के रूप में कॉली ने संदर्भित किया कि कैसे एक बच्चा गणित सीखने के दौरान अपने हाथों और /

या उंगलियों पर भरोसा करना सीखता है।

उद्देश्य की धारणा

दर्शन में, वस्तुनिष्ठता व्यक्तिनिष्ठता (व्यक्ति की धारणा, भावनाओं या कल्पना से उत्पन्न पूर्वाग्रह) से स्वतंत्र सत्य की अवधारणा है। एक प्रस्ताव को वस्तुनिष्ठ सत्य माना जाता है

जब इसकी सत्य स्थितियाँ बिना किसी भावुक विषय के किए गए पूर्वाग्रह से मिलती हैं।

Notion of Objective

In philosophy, objectivity is the concept of truth independent from individual subjectivity (bias caused by one's perception, emotions, or imagination). A proposition is considered to have objective truth when its truth conditions are met without bias caused by a sentient subject.

ज्ञान की निष्पक्षता

"वस्तुनिष्ठ ज्ञान" बस एक उद्देश्य वास्तविकता के ज्ञान को संदर्भित कर सकता है। ... किसी व्यक्ति के व्यक्तिपरक ज्ञान को केवल व्यक्तिपरक ज्ञान के रूप में संदर्भित करना सुविधाजनक है। इस परिभाषा के बाद, वस्तुनिष्ठ ज्ञान अपने व्यक्तिपरक राज्यों के अलावा किसी भी चीज़ का ज्ञान होगा।

Objectivity of Knowledge

"Objective knowledge" can simply refer to knowledge of an objective reality. ... It is convenient to refer to knowledge of one's own subjective states simply as subjective knowledge. Following this definition, objective knowledge would be knowledge of anything other than one's own subjective states.

सार्वभौमिकता की धारणा

तर्क में, या मान्य तर्कों के विचार से, एक प्रस्ताव में सार्वभौमिकता होने की बात कही गई है यदि यह एक विरोधाभास पैदा किए बिना सभी संभावित संदर्भों में सच होने के रूप में कल्पना की जा सकती है।

Notion of Universality

In logic, or the consideration of valid arguments, a proposition is said to have universality if it can be conceived as being true in all possible contexts without creating a contradiction.

(द)

Sociology of Knowledge

मनुष्य समाज में रहता है। बिना समाज के उसका अस्तित्व नहीं है। समाज में ही उसका जन्म होता है समाज से ही उसकी आवश्यकताएं पूरी होती है समाज में ही रह कर

वह पल और बड़ा होता है एवं विभिन्न अवस्थाओं में रहकर अलग-अलग प्रकार से योग्यताएं एवं कौशल प्राप्त करता हुआ वह समाज के सदस्य के रूप में बड़ा होकर एक समाज का एक सदस्य बनता है। समाज की उन्नति से उसकी उन्नति होती है। समाज की सुरक्षा से उसे सुरक्षा मिलती है।

यदि हम शिक्षा की बात करें तो वह भी निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है। समाज शास्त्र के अध्ययन से समाज की शैक्षिक स्थिति का भी पता चलता है। शैक्षिक समाजशास्त्र एक ऐसा पृथक विषय है जो समाज में शिक्षा का प्रभाव शैक्षिक स्थिति शिक्षा की आवश्यकता आदि का ज्ञान देता है। यह विषय हमें इस बात का भी ज्ञान देता है कि किस समाज में कैसी शिक्षा की प्रकार एवं स्तर के आवश्यकताएं हैं। शिक्षा के लिए हम कह सकते हैं कि *"शिक्षा चैतन्य रूप में एक नियंत्रित प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।"* ब्राउन-

शिक्षा से निम्नलिखित उद्देश्य की प्राप्ति हो सकती है-

- बालक में सामाजिकता का विकास
- बालक को में प्रजातांत्रिक गुणों का विकास
- बालक को में नागरिकता के गुणों का विकास
- अवकाश के समय में सदुपयोग की शिक्षा
- जीवन मूल्यों की समझ का विकास

उपरोक्त के अलावा शिक्षा के प्रकार से समाज में जो स्थिति उत्पन्न होती है वह निम्नानुसार है :-

- ज्ञान का प्रसार
- सामाजिक परंपरा की सुरक्षा एवं हस्तांतरण
- सामाजिक विकास
- सामाजिक नियंत्रण

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा के माध्यम से बालक का विकास होता है। बालक एक ऐसे सामाजिक सदस्य के रूप में विकसित होता है जो व्यक्तिगत हित की तुलना में सामाजिक हित को महत्व देना है। उसके में कर्तव्य बोध, नैतिकता ईमानदारी, भाईचारा, राष्ट्रप्रेम की भावना आती है और वह अनुशासित हो जाता है। इसी तरह शिक्षा के माध्यम से एक सदस्य के साथ पूरे समूह की रचना होती है। समाज की आवश्यकता

के अनुसार शिक्षा में परिवर्तन ही करते जाते हैं। समाज की अनेक कुरीतियों को भी शिक्षा के माध्यम से मिले ज्ञान से दूर होती है।

समाज पर शिक्षा का पूरा प्रभाव पड़ता है और समाज की आवश्यकतानुसार शिक्षा में परिवर्तन होता है। अतः शिक्षा समाज की आवश्यकता को भी पूर्ण करती है और समाज परिवर्तन का भी कारण बनती है।

समाज में व्याप्त विषमता को भी हम शिक्षा के माध्यम से दूर कर सकते हैं। शिक्षा के सर्वव्यापी करें एवं समानता के लिए शिक्षा, सबके लिए शिक्षा के माध्यम से समाज के वंचित लोग भी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और समाज में समरसता व्याप्त हो सकती है। शिक्षा प्राप्त करके अपनी योग्यता एवं कौशल से अपना पिछड़ापन दूर करके समाज में अपनी स्थिति को बेहतर कर सकते हैं। शिक्षा चरित्र निर्माण के साथ-साथ जीवन निर्वाह का साधन भी है और शिक्षा का विकास का पथ भी है। अतः पाठ्यक्रम में ज्ञान के ऐसे तत्वों का समावेश हो जो समाज की बेहतरी के लिए और हमें समाज के भूतकाल में जो अवसरों की समानता है उससे निजात दिला सकती हैं।

उदाहरण दिया जा सकता है-

पाठ्यक्रम में प्रस्तावक ज्ञान, क्रियात्मक ज्ञान एवं एक्वेटेंस ज्ञान का विशेष स्थान। तीनों प्रकार के ज्ञान से ही बच्चों को शिक्षा दी जा सकती है।

प्रस्तावक ज्ञान के माध्यम से - इतिहास या व्याख्यात्मक ढंग से सिखाएं जाने वाली पाठ्यवस्तु का समावेश होता है। यह बच्चों में वर्णन करने की क्षमता का विकास करता है जो आवश्यक है।

प्रक्रियात्मक ज्ञान - ऐसी पाठ्यवस्तु जो एक निश्चित प्रक्रिया के अनुसार पूर्ण होती है। इसे प्रयोगात्मक ज्ञान भी कहते हैं। विज्ञान की विषय वस्तु का इसमें समावेश होता है।

एक्वेटेंस ज्ञान - जाना पहचाना ज्ञान, जिसके बारे में जानना हो उससे पहले परिचय प्राप्त करें । नाव चलाना, साइकिल चलाना आदि।

इस तरह पाठ्यक्रम में उपरोक्त तीनों प्रकार के ज्ञान का अपना महत्व है उनका पाठ्यक्रम में समावेशन आवश्यक है

युनिट - 5

(अ)

Children and knowledge construction.

How knowledge can be constructed? what is involved in construction of knowledge?

बच्चे स्वाभाविक रूप से सीखते हैं। बच्चों की पहचान एक सीखने वाले ग्रुप में किया जाना चाहिए।

- बच्चे अपनी गतिविधि से सीखते हैं।
- बच्चे संवाद से सीखते हैं।
- बच्चे अनुभव से सीखते हैं।
- बच्चे जैसे ही किसी वस्तु या व्यक्ति के संपर्क में आते हैं के संपर्क में या किसी स्थान पर जाते हैं वहां वहां अंतर क्रिया करने लगते हैं। और कुछ न कुछ सीखते हैं।

इस प्रकार बच्चे के साथ किसी का भी किसी प्रकार का संपर्क ज्ञान सृजन करवाता है एवं वातावरण और अपनी गतिविधि ज्ञान सृजन की प्रक्रिया में सम्मिलित होते हैं।

इस तरह ज्ञान का निर्माण एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार से होती है। अतः क्रिया करने के लिए सीखने वाले के पास कोई व्यक्ति, वस्तु या कोई गतिविधि होनी चाहिए। जिसके फलस्वरूप सीखने वाला विश्लेषण करना, किसी घटना का उसको किसी दूसरी घटना से साम्यता करना या उसके अच्छे बुरे प्रभाव पर चिंतन करना सिखाता है।

(ब)

Teaching as impating knowledge- Vs -Teaching is enabling children's construction of knowledge.

शिक्षण ज्ञान प्रदान करता है या शिक्षण से बच्चे ज्ञान के निर्माण में सक्रियता से जुड़ते है-

शिक्षण कैसा हो ज्ञान के प्रदान करने के लिए कि बच्चों को ज्ञान निर्माण में सक्रिय करने के लिए-

NCF-2005 के अनुसार शिक्षण विद्यार्थी को संदर्भ में रखकर किया जाना चाहिए कुछ बिंदु उसमें सुझाए गए हैं-

- बच्चों की आवाज और अभिव्यक्ति को कक्षा में अवसर दिया जाए बच्चे केवल शिक्षकों के प्रश्नों का जवाब देने के लिए ना बोले वह अपने अनुभव को साझा करते हुए किताबी ज्ञान को आत्मसात करें यह अवसर कक्षा में दिया जाए।
- कक्षा में प्रत्येक बच्चे के अनुभव भाषा एवं संस्कृति पर चर्चा हो और उसे शिक्षण के साधन की तरह उपयोग किया जाए इसके फलस्वरूप प्रत्येक बच्चा अपने को कक्षा में स्कूल में महत्वपूर्ण मानेगा।
- किताबी ज्ञान को दोहराने की क्षमता की बजाय शिक्षण ऐसा हो कि बच्चे अपनी उत्सुकता का पोषण कर सकें सवाल पूछे जाने पर कि और अपने अनुभव को स्कूली ज्ञान के साथ जोड़ सकें।
- बच्चे वहां सीखने में आनंद का अनुभव करते हैं जहां उन्हें महत्वपूर्ण समझा जाए सीखने के बाद आनंद एवं संतोष को हुए महसूस करें पूर्ण अनुशासन में रहें ऐसा ही स्कूल का वातावरण और ऐसा ही शिक्षण हो।
- उपरोक्त शिक्षण करने में सक्षम हो सके इसके लिए उसे विषय ज्ञान के साथ सात विषय को बच्चों तक पहुंचाने के लिए वातावरण बनाने का ज्ञान बच्चों को प्रति संवेदनशील होना चाहिए।
- सभी बच्चों में क्षमता है सीखने की कौशल प्राप्त कर सकते हैं यह भावना शिक्षक की हो एवं यह एहसास वह प्रत्येक बच्चों में विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के बावजूद है करवाएं।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक बच्चों को सीखने के लिए प्रति प्रेरित करें शिक्षण करें तो बच्चे ज्ञान के सीजन करने में सक्षम होंगे और सीखने में उत्सुक रहेंगे।

यदि ऐसा ना कर शिक्षक ज्ञान को प्रदान करेगा यह मानकर कि बच्चों के पास पूर्व से कुछ ज्ञान नहीं है तो बच्चे किताबी ज्ञान को रखने लगेगा और उसकी ज्ञान सृजन की क्षमता धीरे-धीरे खत्म हो जाएगी। ऐसी कक्षाओं में सिर्फ शिक्षकों की ही आवाज सुनाई देती है। जब-जब शिक्षक चाहते हैं तभी बच्चे बोलते हैं। ऐसी भयपूर्ण या कठोर अनुशासन में बच्चें अब महसूस करते हैं। तन से तो कक्षा में रहते हैं किंतु मन से कहीं और भटकते हैं। इसलिए

शिक्षक को One Way Teaching **या ज्ञान प्रदाता के रूप में शिक्षण नहीं करना चाहिए।**

अत: स्पष्ट है कि ज्ञान का निर्माण करने के लिए, बच्चों को सक्रिय करने के लिए वातावरण बनाना ही शिक्षण की पद्धति है।

(स)

Children as individual construction of knowledge Vs - The motion of social construction of knowledge and scaffolding by poem and seniors.

बच्चा ज्ञान का एक निर्माता है, कि अवधारणा की समाज की सहायता से ज्ञान का निर्माण होता है और साथी तथा अग्रज, सिनियर लोग ज्ञान निर्माण का ताना-बाना तैयार कर के देते है और इस तरह से ज्ञान होता है । इसकी विवेचना करते समय हम थे कि बच्चे ज्ञान का निर्माण अकेले कैसे करते हैं। इस पर विचार करें तो यदि छोटे बच्चे को कोई प्रश्न करें तो वह थोड़ा सोच कर, संगत बिठाकर जवाब देता है। यानी ज्ञान का निर्माण प्रारंभ से ही अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर करते जाता है क्रमशः उसमें परिष्कार करते जाता है। अनौपचारिक रूप से तो वह वह निरंतर ज्ञान का निर्माण करते ही है और 40 **रूप से वे विद्यालयों में भी अपने ज्ञान के नवीन ज्ञान जोड़ते जाता है। यद्यपि ज्ञान क्रमशः के माध्यम से विद्यालय में समूह में ज्ञान का निर्माण करने की प्रक्रिया अपनाई जाती है। किंतु प्रत्येक बच्चा दूसरे से भिन्न है और वह स्वयं अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर निरंतर ज्ञान का सृजन करते जाता है।**

जैसे-

- **पाठ्यक्रम के माध्यम से निरंतर नवीन प्रवृत्तियों से परिचित हो धारण करते जाता है।**
- **पाठ्यक्रम के माध्यम से वह स्वयं का संज्ञानात्मक विकास करता है।**
- **विद्यालय में वह समाजीकरण सीखता है।**
- **बालक कर्तव्य निर्वहन सीखता है।**

- बालकों को व्यक्तिगत बहुत का अवसर मिलता है।
- सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है।
- बालक स्वयं की सृजनात्मक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक आदि शक्तियों का विकास करता हुआ अपने संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करता है।

इस प्रकार बालक समूह में रहते हुए निरंतर स्वयं ज्ञान का निर्माण करते जाता है यद्यपि ज्ञान निर्माण करने के लिए उसे परिस्थिति समाज से ही मुहैया कराई जाती है।

अब हम देखेंगे कि समाज किस प्रकार बालक को ज्ञान निर्माण में सहायक होता है या कहें बच्चे के साथ या उसके अग्रज किस प्रकार ताना-बाना तैयार करते हैं नवीन ज्ञान का सृजन कर सकें।

अनौपचारिक रूप से देखें तो बच्चा जन्म से ही समाज में रहता है। भाषा के संकेत भाव क्रियाएं सब कुछ वह अपने परिवार बाहर साथी क्रीड़ा मैदान मनोरंजन के साथ आदि स्थानों में समाज से ही सीखता है दूसरे शब्दों में कहें तो समाज ही बच्चों को ज्ञान प्राप्त करने की परिस्थिति देता है।

यद्यपि इन परिस्थितियों में उसके स्वयं के सीखने की इच्छा एक क्षमता का प्रभाव पड़ता है। यदि समाज ना होता तो बच्चा अनौपचारिक रूप से कुछ भी नहीं सकेगा जन्म से भेड़ियों के बीच पहले मानव की कहानी हम सब जानते हैं।

इसी तरह औपचारिक शिक्षा की बात करें तो विद्यालयों में पाठ्यचर्या एक संसाधन के रूप में उपयोग किया जाता है जिसके माध्यम से बच्चों को उनकी रुचि के अनुकूल समाज की आवश्यकता के अनुरूप समाज के नागरिक के रूप में तैयार किया जाता है।

विद्यालयों में बच्चे का को चहुंमुखी विकास किया जाता है वह समाज के नागरिक के द्वारा तैयार की गई योजना के आधार पर समाज के लिए किया जाता है ।

अतः हम कह सकते है कि ज्ञान सृजन की स्थिति, साधन सब कुछ समाज बनाता है बच्चा वहा अतः क्रिया करके अपने ज्ञान का सृजन करता है ।
बिना समाज के सहयोग के यह कार्य संभव नहीं है एवं बिना बच्चे की इच्छा के वह ज्ञान सृजन नहीं करेगा । अतः ज्ञान सृजन की प्रक्रिया में दोनों ही जरूरी है।

(द)

Children's experience and knowledge in community knowledge in the shaping of their under standing new concept and ideas.

बच्चों के अनुभव एवं ज्ञान और समुदाय से प्राप्त ज्ञान बच्चों की समझ, नवीन अवधारणा एवं (आइडिया)तरकीब से सोचने एवं ज्ञान प्राप्त करने को स्वरूप देता है।

इसका विश्लेषण यह हो सकता है कि यदि बच्चे के अनुभव को और पूर्व ज्ञान को औपचारिक ज्ञान केंद्र स्कूल में उपयोग किया जाए तो बच्चे अपने ज्ञान का उपयोग अपनी दैनिक जीवन की वस्तुओं और घटनाओं से जोड़ेंगे और अपनी सोच को विकसित करते हुए धारदार बना सकेंगे।

जैसे यदि पेड़ों के संबंध में पढ़ाते समय शिक्षक पहले बच्चों से उनके अनुभव जाने। पूरी कक्षा में बच्चों की जो संख्या होगी वह एक संसाधन के रूप में उपयोगी होगी और फिर बच्चे कक्षा में जो जानेंगे उसे दैनिक जीवन में सह-संबंधित करेंगे और अपनी अवधारणा को एक नया स्वरूप देंगे।

इस तरह समुदाय एवं स्कूल मिलकर बच्चे के ज्ञान प्राप्ति में सहयोगी होंगे।

इसके लिए आवश्यक है कि-

- स्कूल और समुदाय की दीवार सरंध हो।
- बच्चों की आवाज कक्षा में सुनी जाए।
- शिक्षण के समय शिक्षक कक्षा की चारदीवारी तक सीमित ना रहे।
- समुदाय में स्थित संसाधनों का प्रयोग उसके पास जाकर या उसे स्कूल में लाकर दिया जाए।
- ज्ञान को किताबी ना किया जाए।
- ज्ञान प्रदाय की प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता अवश्य लिया जाए।
- शिक्षण करते समय स्थानीय उदाहरणों को जोड़ा जाए।

(इ)

Class room as a space colabrative construction of new knowledge Vs a space for transfer or re- construction of pre-existing knowledge

कक्षा-कक्ष एक ऐसा स्थान है जहां-

सहभागिता पूर्ण नए ज्ञान का निर्माण होता है, या

एक ऐसा स्थान है जहां-

ज्ञान का हस्तांतरण होता है, या

पूर्व ज्ञान का पुनर पुनर्सृजन होता है-

ज्ञान निर्माण एक सहभागिता पूर्वक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। कक्षा में प्रत्येक छात्र कुछ ज्ञान के साथ प्रवेश करता है और यह ज्ञान उसका प्रत्येक क्षेत्र में रहता है। एक कक्षा के विद्यार्थियों का ज्ञान और अनुभव लगभग समान किंतु सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर विविध रहता है। कक्षा-कक्ष में जब शिक्षक विद्यार्थियों को सक्रिय रखते हुए शिक्षण करता है तो बच्चों के अनुभव और पूर्व ज्ञान एक दूसरे के लिए नवीन ज्ञान के रूप में होते हैं इस प्रकार कक्षा एक ऐसी जगह के रूप में कही जा सकती है जहां बच्चे सहभागिता पूर्वक नवीन ज्ञान प्राप्त करते हैं।

उदाहरण दिया जा सकता है- खान-पान, अनुभव, पारिवारिक आय के साधन आदि रूप में।

कक्षा-कक्ष में बच्चे अपने ज्ञान के पूर्व ज्ञान के आधार पर ज्ञान का पुनर्सृजन भी करते हैं या ज्ञान का हस्तांतरण ही करते हैं।

क्योंकि कक्षा-कक्ष एक ऐसा स्थान है जहां एक व्यवस्थापक या प्रबंध कर्ता के रूप में शिक्षक होता है एवं हमउम्र के बच्चे उसके साथ संलग्न रहकर उसके निर्देश का पालन करते हैं। ऐसी परिस्थिति में बच्चे अपने पूर्व ज्ञान को दूसरे बच्चे के साथ अनुभव के रूप में बांटते हुए अपने साथी को ज्ञान का हस्तांतरण कर देते हैं।

जैसे - शिक्षक ने विभिन्न समूह बनाकर यदि कोई समस्या बच्चों के सम्मुख रख दें तो बच्चे एक दूसरे से अपने विचारों को बांटते हुए उस समस्या का समाधान करेंगे।

कक्षा-कक्ष में बच्चे ज्ञान को पुनः भी रचते हैं जैसे कक्षा-कक्ष में उन्होंने किसी ज्ञान को प्राप्त किया तो ग्रंथालय में, प्रयोगशाला में उसके आधार पर तर्क एवं मनन से पुनः उसी ज्ञान को पुष्ट करते हैं।

इस तरह तर्क पूर्वक पूर्वक ज्ञानमननपुर ज्ञान को पुनर्रचना की ज्ञान का पुनर्निर्माण कहलाता है।

विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहां बच्चे का चहुमुखी विकास होता है और वहां-

- बच्चे का सामाजिकरण होता है।
- बच्चा ज्ञान सृजित करता है।

- बच्चा पूर्व ज्ञान से पुनःज्ञान से सृजित करता है।
- ज्ञान का हस्तांतरण करता है।
- समाज एवं विद्यालय से प्राप्त ज्ञान को अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करता है।
- यानी समाज के अनुभव से स्कूल के ज्ञान में तारतम्य बिठाते हुए भविष्य की तैयारी करता है।

------------------///--------------------